Ashish kumar Thakur
B.A. II, History(H), Paper-II
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

वॉरेन हेस्टिंग्स [1772-1785]
Warren Hastings.

वॉरेन हेस्टिंग्स की बंगाल के गवर्नर के रूप में नियुक्ति ईस्ट इंडिया कंपनी के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ती है। उसने वास्तविकता को पहचानने का प्रयत्न किया। बंगाल पर विजय के अधिकार से शासन करने का प्रयत्न किया। उसका कार्य कठिन था।

(i) **प्रशासनिक सुधार :-** 1772 में कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्स ने दोहरी प्रणाली को समाप्त करने का निर्णय किया तथा कलकत्ता परिषद तथा उसके प्रधान को आज्ञा दी कि वे स्वयं दीवान बने और बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा के प्रबन्ध को पदच्युत कर दिया। ~~परिषद तथा प्रधान मिलकर अब~~ ~~व्यवस्था~~ अपने हाथ में ले लें। वारेन हेस्टिंग्स ने दोनों उपदीवानों, मुहम्मद रजा खाँ तथा राजा सिताब राय को पदच्युत कर दिया। परिषद तथा प्रधान मिलकर अब राजस्व बोर्ड (Board of Revenue) बन गए तथा बोर्ड ने कर संग्राहक नियुक्त कर दिए, जिनका कार्य कर व्यवस्था करना था। कोष मुर्शिदाबाद से कलकत्ता लाया गया। समस्त प्रशासन का बोझ कंपनी के कार्यकर्ताओं पर डाल दिया गया तथा नवाब को इस कार्य का लेश मात्र भी अधिकार नहीं रहा।

1765 से दिया जाने वाला मुगल सम्राट का 26 लाख वार्षिक पैसा बंद कर दिया गया। सम्राट को दिए हुए इलाहाबाद तथा कारा के जिले पुनः वापस ले लिए गए तथा 50 लाख रुपये में अवध को बेच दिए।

मीर जाफर की विधवा मुन्नी बेगम अल्पवयस्क नवाब मुबारकुद्दौला की संरक्षक नियुक्त किया। इसका भत्ता 32 लाख से घटाकर 16 लाख कर दिया।

मुगल सम्राट के साथ व मराठा सम्राट के साथ सभी निर्णय एकपक्षीय तथा अन्यायपूर्ण थे। वारेन हेस्टिंग्स का यह कार्य सर्वथा अन्यायपूर्ण ही था।

(ii) **भूमि सुधार / कर सुधार :-** 18वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में अकबर तथा अन्य मुगल सम्राटों की स्थापित की हुई कर-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो चुकी थी।

Ashish.

वारेन हेस्टिंग्स का विश्वास था कि समस्त भूमि शासक की है जमींदारों के केवल कर संग्रहकर्ता ही माना जिन्हें कृषकों से कर संग्रह करने के लिए केवल अपनी कमीशन का ही अधिकार था।

संतोषजनक राजस्व व्यवस्था स्थापित करने के लिए उसने सुप्रसिद्ध परीक्षण तथा अशुद्धि का नियम अपनाया।

[क] 1772 में वारेन हेस्टिंग्स ने कर संग्रहण के अधिकार ऊँची बोली वालों को पाँच वर्ष के लिए नीलाम कर दिया। इस तर्क पर कि जमींदार भूमि का स्वामी नहीं है।

1773 में कर-संग्रह की व्यवस्था में कुछ परिवर्तन किए। जिलों तथा नीजि व्यापार में लगे कलक्टरों को हटा दिया गया तथा उनके स्थान पर जिलों में भारतीय दीवान नियुक्त किए गए। उनका कार्य निरीक्षण करने के लिए 6 प्रान्तीय परिषद नियुक्त की गई। ये सब कलकत्ता स्थित राजस्व समिति के अधीन होती थी।

यह पंचवर्षीय व्यवस्था सर्वथा असफल रही। कृषकों को बहुत कष्ट हुआ। उन्होंने कृषकों से अधिकतम कर प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

[ख] 1776 में पंचवर्षीय ठेके की समाप्ति पर पुनः एकवर्षीय प्रणाली अपनाई गई और कर संग्रहण के अधिकार नीलाम कर दिए गए।

1781 में पुनः इस व्यवस्था में सुधार किया गया। तथा प्रांतीय परिषद समाप्त कर दी गई। जिले में कलक्टर नियुक्त किए गए लेकिन उन्हें कर निश्चित करने का अधिकार नहीं था।

अंत में हम कह सकते है कि वारेन हेस्टिंग्स कोई निश्चित कर व्यवस्था अथवा प्रणाली बनाने में असफल रहा। इसका मुख्य कारण था उसकी केन्द्रीकरण की नीति। अंत में 1782 में सर जॉन शोर यह कहना पड़ा कि "जिलों में वास्तविक स्थिति की तथा भूमि कर की जानकारी आज हमें 1774 की तुलना में कम ही है"

कार्नवालिस को यह कहना पड़ा था कि "कंपनी के अधीन प्रदेश का तीसरा भाग केवल उजाड़ है तथा वहाँ जंगली पशु ही बसते हैं"

Ashish

Scanned with CamScanner